26 MAY 2022

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No. ....

Maitreyi College Chanakya Puri, New Delhi-110021 LIBRARY

Sr. No. of Question Paper : 4097 A

Unique Paper Code : 62051412

Name of the Paper : Hindi Gadya : Udbhav aur Vikas (Hindi-B)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Functional Hindi**

Semester : IV (CBCS)

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिंदी गद्य की विकास-यात्रा पर लेख लिखिए। (12)

अथवा

नाटक के प्रमुख तत्वों पर प्रकाश डालिए।

P.T.O.

2. 'उसने कहा था' कहानी की मूल संवेदना पर विचार कीजिए। (12)

अथवा

'गुंडा' कहानी की तात्विक समीक्षा कीजिए।

3. 'मेले का ऊँट' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

अथवा

'भोलाराम का जीव' पाठ का सार लिखिए।

4. 'अंधेर नगरी' के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

अथवा

रेखाचित्र के तत्वों के आधार पर 'बिबिया' की समीक्षा कीजिए।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10,10)

(क) बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन हुआ करता है। बूढ़ी काकी में जिह्वा-स्वाद के सिवा और कोई चेष्टा शेष न थी और न अपने कष्टों की ओर आकर्षित करने का, रोने के अतिरिक्त कोई दूसरा सहारा ही। समस्त इन्द्रियाँ, नेत्र हाथ और पैर जवाब दे चुके थे। पृथ्वी पर पड़ी रहतीं और घर वाले कोई बात उनकी

इच्छा के प्रतिकूल करते, भोजन का समय टल जाता या उसका परिमाण पूर्ण न होता अथवा बाजार से कोई वस्तु आती और न मिलती तो वे रोने लगती थीं। उनका रोना-सिसकना साधारण रोना न था, वे गला फाड़-फाड़कर रोती थीं।

अथवा

आजकल पृथ्वी पर इस प्रकार का व्यापार बहुत चला है। लोग दोस्तों को कुछ चीज भेजते हैं और उसे रास्ते में ही रेलवे वाले उड़ा लेते हैं। हौजरी के पार्सलों के मोजे रेलवे अफसर पहनते हैं। मालगाड़ी के डब्बे के डब्बे रास्ते में कट जाते हैं। एक बात और हो रही है। राजनीतिक दलों के नेता विरोधी नेता को उड़ा कर बंद कर देते हैं। कहीं भोलाराम के जीव को भी तो किसी विरोधी ने मरने के बाद खराबी करने के लिए नहीं उड़ा दिया?।

(ख) कर्म मार्ग में फंसकर लोग अनेक देवी देवों को पूजते हैं, किंतु बुद्धि का यह प्रकृत धर्म है कि यह ज्यों-ज्यों समुज्जवल होती है अपने विषय मात्रा को उज्ज्वल करती जाती है। थोड़ी बुद्धि बढ़ने से ही यह विचार चित्त में उत्पन्न होता है कि इतने देवी देव इस अनंत सृष्टि के नियामक नहीं हो सकते, इनका कर्ता स्वतंत्र कोई विशेष शक्तिसंपन्न ईश्वर है।

munotes.in

अथवा

हार-जीत की वस्तुएँ भी विचित्र होती थीं। कपड़ा, जूता, रुपया-पैसा, बर्तन आदि में से जो हाथ में आया, वही दाँव पर रख दिया जाता था। कोई किसी की घरवाली की हँसुली जीत लेता और कोई किसी की पतोहू के झुमके। कोई अपनी बहन की पहुँची हार जाता था और कोई नातिन के कड़े। सारांश यह कि जुए के पहले चोरी-डकैती की आवश्यकता भी पड़ जाती थी।

6. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए : (7)

(क) रेखाचित्र

(ख) गद्य के विकास में सामाजिक-धार्मिक संस्थाओं की भूमिका

(ग) कहानी और उपन्यास का अंतर

munotes.in